पंजीयन क्र. 50309/85 के अन्तर्गत भारत सरकार के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्र. म.प्र./261/ भोपाल/2006-08

बाल विज्ञान पत्रिका

जुलाई 2008 • 15 रुपए

चकमक

ज़मीं को जादू आता है!

ये मेरे बाग की मिट्टी में कुछ तो है
ये जादुई ज़मीं है क्या?
ज़मीं को जादू आता है!

अगर अमरूद बीजूँ मैं, तो ये अमरूद देती है
अगर जामुन की गुठली डालूँ तो जामुन भी देती है
करेला तो करेला...निम्बू तो निम्बू!

अगर मैं फूल माँगू तो गुलाबी फूल देती है
मैं जो रंग दूँ उसे, वो रंग देती है
ये सारे रंग क्या उसने कहीं नीचे छुपा रक्खे हैं मिट्टी में?
बहुत खोदा मगर कुछ भी नहीं निकला...!
ज़मीं को जादू आता है!

ज़मीं को जादू आता है
बड़े करतब दिखाती है
ये लम्बे-लम्बे ऊँचे ताड़ के जब पेड़, उँगली पर उठाती है
तो गिरने भी नहीं देती!
हवाएँ खूब हिलाती हैं, ज़मीं हिलने नहीं देती!

मेरे हाथों से शर्बत, दूध, पानी
कुछ गिरे सब डीक जाती है
ये कितना पानी पीती है!
गटक जाती है जितना दो,

इसे लोटे से दो या बाल्टी से,
या नल दिन भर खुला रख दो
गज़ब है, पेट भरता ही नहीं इस का
सुना है ये नदी को भी छुपा लेती है अन्दर!
ज़मीं को जादू आता है!
यकीनन जादू आता है!!

गुलज़ार

स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो प्रकाशक, मुद्रक सी. एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक, एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल-462016, (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फ़ोनः 0755 - 2687589) से मुद्रित। सम्पादकः सुशील शुक्ल।